कथा सरिता

सफलता का रहस्य

एक बार की बात है किसी शहर में एक लड़का रहता था जो बहुत गरीब था। मेहनत मज़दूरी करके बड़ी मुश्किल से दो वक्त का खाना जुटा पाता।

एक दिन वह किसी बड़ी कंपनी में चपरासी की जॉब के लिए इंटरव्यू देने गया। बॉस ने उसे देखकर उसे काम दिलाने का भरोसा जताया।

जब बॉस ने पूछा - ``तुम्हारी ई.मेल आई.डी.'' क्या है? लड़के ने मासूमियत से कहा कि उसके पास ई.मेल आई.डी. नहीं है।

ये सुनकर बॉस ने उसे बड़ी घृणा दृष्टि से देखा और कहा कि आज दुनिया इतनी आगे निकल गयी है और एक तुम हो कि ई.मेल आई.डी. तक नहीं है, मैं तुम्हें नौकरी पर नहीं रख सकता।

ये सुनकर लड़के के आत्मसम्मान को बहुत ठेस पहुंची, उसकी जेब में उस समय 50 रुपये थे। उसने उन 50 रुपयों से 1 किलो सेब खरीदा और अपने घर चलता बना। वह घर-घर जाकर सेबों को बेचने लगा और ऐसा करके उसने 80 रुपये जमा कर लिए। अब तो लड़का रोज़ सेब खरीदता और घर-घर जाकर बेचता। सालों तक यही सिलसिला चलता रहा। लड़के की कठिन मेहनत रंग लायी और एक दिन उसने खुद की कंपनी खोली जहां से विदेशों में सेब सप्लाई किये जाते थे। उसके बाद लड़के ने पीछे मुड़कर नहीं देखा और जल्दी ही बहुत बड़े पैमाने पर अपना बिज़नेस फैला दिया और एक सड़क छाप लड़का बन गया अरबपति।

एक दिन कुछ मीडिया वाले लड़के का इंटरव्यू लेने आये और अचानक किसी ने पूछ लिया - ``सर आपकी ई.मेल आई.डी. क्या है?? लड़के ने कहा - ``नहीं है'', यह सुनकर सारे लोग चौंक पड़े कि एक अरबपति आदमी के पास एक ``ई.मेल आई.डी.'' तक नहीं है। लड़के ने हँसकर जवाब दिया - ``मेरे पास ई.मेल आई.डी. नहीं हैं इसीलिए मैं अरबपति हूँ, अगर ई.मेल आई.डी. होती तो मैं आज एक चपरासी होता''।

मित्रों, इसीलिए कहा जाता है कि हर इंसान के अंदर कुछ ना कुछ खूबी ज़रूर होती है, भीड़ के पीछे भागना बंद करो और अपने टैलेंट और स्किल को पहचानो।

दूसरों से अपनी तुलना मत करो कि उसके पास वो है, मेरे पास नहीं है, जो कुछ तुम्हारे पास है उसे लेकर आगे बढ़ो फिर दुनिया की कोई ताकत तुम्हें सफल होने से रोक नहीं सकती।

सिक्के के दो पहलू

रामपुर गांव की सीमा पर एक मंदिर था। मंदिर के पास ही कुटिया बनाकर दो साधु रहते थे। वे दिन भर मंदिर में पूजा-ध्यान करते थे। वहीं पर गांव वाले जो दे जाते उसी से पेट भर लेते थे। एक दिन दोनों साधु किसी काम से गांव से बाहर गए हुए थे। पीछे से गांव में इतना तेज़ आंधी-तूफान आया कि उनकी कुटिया आधी टूट गई। एक साधु लौटा तो कुटिया की हालत देखकर उसे गुस्सा आ गया। वह बोलने लगा, `हे ईश्वर, मैं दिनभर आपका ध्यान करता हूँ फिर भी मेरे साथ हमेशा गलत करते हो। जो लोग गलत काम करते हैं उनके मकान सही सलामत हैं और हम साधुओं की एक कुटिया थी वह भी टूट गई। ऐसा लगता है कि आप भक्तों से प्रेम ही नहीं करते।' उसके पीछे-पीछे ही दूसरा साधु भी पहुंच गया। उसने जब आधी टूटी हुई कुटिया को देखा तो खुशी से उछलने लगा। वह बोला, `हे ईश्वर, आज विश्वास हो गया कि आप अपने भक्तों से कितना प्रेम करते हो। आधी कुटिया आपने ही बचाई है, नहीं तो इतनी तेज़ आंधी में पूरी भी टूट सकती थी। आपकी ही कृपा है कि सर ढ़कने को जगह तो बच गई। अब तो मैं आपका और भी ध्यान करुंगा। आप धन्य हैं।' एक व्यक्ति जो किसी समस्या से निराश होकर वहां खड़ा था और यह सब देख रहा था, उसे लगा कि एक ही परिस्थिति को दो साधुओं ने अलग नज़रिए से देखा। यदि दूसरे साधु की तरह ही विकट परिस्थिति को सकारात्मक ढंग से मैं भी लूं तो मेरी कोई समस्या हीं नहीं है। वह खुशी-खुशी अपने घर लौट गया।

घमंडी का सिर नीचा

चंदन वन में एक मोर रहता था। एक दिन उसने झील में अपनी परछाई देख ली। अपनी सुंदरता देख वह आश्चर्यचकित हो गया। अपने सिर पर ताज देखकर उसे लगा, वही पक्षियों का राजा है। वह घमंड में चूर होकर चलने लगा। रास्ते में उसे एक मुर्गी मिली जो अपने चूजों के साथ जा रही थी। मोर चूजों को ठोकर मारता हुआ निकल गया। यह देख मुर्गी को क्रोध आया पर तब तक मोर आगे निकल चुका था। अब मोर के रास्ते में कोई भी आता उसे ठोकर मारते हुए आगे निकल जाता। तभी अचानक बादलों की गरज के साथ तेज़ हवाएं चलने लगीं। मोर यह सोचकर आगे बढ़ता रहा, `मैं तो राजा हूँ, आंधी-तूफान मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।' घमंड में उसने सीना चौड़ा किया, पंख उठाए और चलने लगा। हवा की तेज़ी से उसका एक पर टूट गया। लेकिन वह चलता रहा। तभी उसकी दुम भी गिर गई। हवा और तेज़ हो गई थी। मोर को रुकने में अपमान महसूस हो रहा था इसलिए वह चलता रहा। हवा के दबाव से उसे ताकत लगानी पड़ रही थी। उसे थकान हो रही थी फिर भी वह चल रहा था। तभी उसे एक पेड़ से चिड़िया की आवाज़ सुनाई दी, `भाई, तूफान थमने तक इस पेड़ पर रुक जाओ।' मोर ने कहा, `तुम तो कमज़ोर हो इसलिए ऐसा कह रही हो। अब तो आधा ही रास्ता बचा है। मोर हंसते हुए आगे बढ़ा। तूफान और तेज़ हो गया। मोर के बचे हुए पर और ताज भी उड़ गए। धीरे-धीरे मोर के शरीर के बाल भी उस तूफान में उड़ गए लेकिन घमंडी मोर को इसका अहसास ही नहीं हुआ। एक पेड़ पर कौआ बैठा हुआ था। उसने हँसते हुए कहा, ` वो देखो, गंजा मोर।' यह सुनकर मोर को गुस्सा आ गया। उसने एक पेड़ का सहारा लिया। उस पेड़ पर मधुमक्खियों का छत्ता था। थोड़ा सा हिलते ही उन्होंने मोर पर हमला कर दिया। दर्द से चिल्लाता हुआ मोर जंगल की तरफ भागा। तब तक तूफान भी थम गया था। दुःखी मोर ने शरीर पर नज़र डाली तो रो पड़ा और पछताने लगा। उसने ईश्वर से फिर कभी घमंड न करने का संकल्प लिया। थोड़े दिनों में उसके पर निकलने लगे और वह पहले जैसा हो गया।

सच्चा कलाकार कौन

विजयनगर के राजा कृष्णदेव राय हर साल वर्षा उत्सव का आयोजन करते थे। उसमें तरह-तरह की प्रतियोगिताओं में जीतने वालों को पुरस्कार दिए जाते थे। एक साल वर्षा की फुहारें देख राजा ने प्रसन्न होकर वर्षा उत्सव को धूमधाम से मनाने की घोषणा कर दी। यह सुनकर मंत्री ने कहा,`महाराज, इस बार हमारे राज्य के किसी कलाकार को सम्मान दिया जाना चाहिए।' तेनालीराम ने बीच में कहा, `महाराज, मंत्री जी का सुझाव अच्छा है लेकिन सच्चे कलाकार को ही सम्मान मिलना चाहिए।' राजा ने कहा, `तेनालीराम, तुम्हारा क्या मतलब है?' तेनालीराम ने जवाब दिया, `महाराज, सच्चे कलाकार से मेरा मतलब ऐसे शिल्पी से है जो लोगों को खुश करने के लिए मूर्तियाँ नहीं बनाता। मेरी नज़र में एक ऐसा कलाकार है जो मूर्ति बनाते-बनाते खुद ही मूर्ति समान हो गया है। उसे अपने आस-पास की खबर ही नहीं है।' राजा ने कहा, `हम उसे देखना चाहते हैं।' अगले दिन ही राजा, तेनालीराम और दरबारियों के साथ उस शिल्पी को देखने चल पड़े। तेनालीराम उन्हें लेकर राज्य से बाहर `काला पहाड़' के पास पहुंचे। उसकी गुफा से हथौड़ी चलाने की आवाज़ आ रही थी। सभी गुफा में गए तो देखा कि चारो तरफ मूर्तियाँ थीं और उनके बीच शिल्पी बैठा हुआ ऐसा लग रहा था मानो कोई मूर्ति हो। राजा ने मूर्तिकार से पूछा, `क्या बना रहे हो?' शिल्पी बोला,`वर्षारानी की मूर्ति।' नीचे फसलें हैं ऊपर बादल और नीचे नृत्य करती वर्षारानी।' राजा ने कहा, `तुम इन्हें बेचते नहीं हो?' शिल्पी बोला, `नहीं। मैं अपने आनंद के लिए बनाता हूँ। जो लोग मूर्तियाँ ले जाते हैं बदले में कुछ खाने-पीने के लिए दे जाते हैं बस। मुझे कुछ नहीं चाहिए।' राजा आश्चर्य में पड़ गए। वर्षा उत्सव के दिन उन्होंने शिल्पी का सम्मान किया और उसकी बनाई वर्षा रानी की मूर्ति को अपने महल के उद्यान में लगवाया। उन्होंने तेनालीराम को सच्चे कलाकार से मिलवाने के लिए धन्यवाद दिया।

खानपुर-राज.। ज्ञानचर्चा के पश्चात् पुलिस अधीक्षक लखावत जी को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. तपस्विनी।

खतीया-उत्तराखण्ड। नवदुर्गा झाँकी के उद्घाटन पश्चात् चित्र में विधायक पुष्कर सिंह धामी, नोजत्रे पब्लिक स्कूल की एम.डी. ट्विंकल दत्ता, ब्र.कु. सपना, ब्र.कु. उमेश व अन्य।

कुचामन सिटी-राज.। ज्ञानचर्चा के पश्चात् चित्र में विनायक दूध डेयरी के डायरेक्टर भागीरथ चौधरी, ब्र.कु. अनीता व अन्य।

दिल्ली-लाजपत नगर। नवदुर्गा की झाँकी के उद्घाटन अवसर पर उपस्थित हैं काउंसलर सुभाष मल्होत्रा, प्रिन्सीपल अल्का अग्रवाल, ब्र.कु. चन्द्र, ब्र.कु. जया व अन्य।

मनोहरथाना। ज्ञानचर्चा के पश्चात् सेना अधिकारी राजेन्द्र सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. निशा। साथ हैं ब्र.कु. केसर।

रानीखेत। चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए विधायक अजय भट्ट, ब्र.कु. पार्वती, ब्र.कु. नीता व ब्र.कु. कंचन।